PART-1

अलेक्जेण्डर वॉन हम्बोल्ट की भौगोलिक संकल्पनाएं

भाग-2

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल विभाग

SNSRKS महाविद्यालय सहरसा

अलेक्जेण्डर वॉन हम्बोल्ट की भौगोलिक संकल्पनाएं (Geographical Concepts of Humboldt)

हम्बोल्ट ने एक वैज्ञानिक विषय के रूप में भूगोल को संस्थापित करने का अति महत्वपूर्ण और अग्रणीय कार्य किया था। उन्होंने भूगोल की कई संकल्पनाओं को प्रतिपादित किया था जो निम्नांकित हैं-

भाग-2

(iv) भूगोल भौतिक और मानवीय सम्बंधों का अध्ययन है। (Geography is a study of physical and human relationships)

हम्बोल्ट के विचार से भूगोल में जैव (orgaic) और अजैव (inorganic) प्रकृति के सम्बंधों तथा मानव और प्रकृति के मध्य पाये जाने वाले सम्बंधों का विश्लेषण किया जाता है। उनके अनुसार

इन सम्बंधों की खोज करना भूगोलवेत्ता का परम कर्तव्य है। हम्बोल्ट ने 'कॉसमॉस' में भूगोल की प्रकृति बताते हुए लिखा है कि समस्त सजीव और निर्जीव तत्वों में पारस्परिक सम्बन्ध होता है। वनस्पतियों और जन्तुओं की तुलना में मनुष्य अधिक समर्थ होता है और वह मिट्टी, मौसमी दशाओं और अपने चारों ओर व्याप्त वायुमंडल पर अपेक्षाकृत् कम निर्भर करता है। वनस्पतियों और जन्तुओं की तुलना में मानव पर प्रकृति का नियंत्रण अपेक्षाकृत् कम होता है। फिर भी मनुष्य का पार्थिव जीवन के साथ अनिवार्य और घनिष्ट सम्बंध है। भूगोल में इन्हीं सम्बंधों का विश्लेषण किया जाता है।

(v) तथ्यों की विषमांगता (Heterogeneity of phenomena)

हम्बोल्ट के अनुसार क्रमबद्ध विज्ञानों में अध्ययन किये जाने वाले तथ्यों में समरूपता और समांगता पायी जाती है किन्तु 'भूगोल में अध्ययन किये जाने वाले तथ्यों में विषमांगता और भिन्नता होती है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर विद्यमान तथ्यों में सामान्यतः कुछ न कुछ भिन्नता अवश्य पायी जाती है जिसका विश्लेषण करना भूगोलवेत्ता का कर्तव्य होता है। परवर्ती भूगोलवेत्ताओं ने भूगोल को क्षेत्रीय भिन्नता का अध्ययन करने वाले विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया।

(vi) पार्थिव एकता (Terrestrial unity)

पार्थिव एकता में हम्बोल्ट का अटल विश्वास था । उनके अनुसार प्रकृति के जैविक और अजैविक सभी तथ्य परस्पर सम्बंधित होते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। इसलिए पृथ्वी की सही व्याख्या समष्टि रूप में ही की जाती सकती है। सम्पूर्ण प्रकृति में एकता पायी जाती है और भूगोल में इसी एकता का अध्ययन किया जाता है। ब्रूंश के अनुसार हम्बोल्ट ने अपने एक मित्र को पत्र में लिखा था कि 'उत्तरी ध्रूव से दक्षिणी ध्रुव तक केवल एक आत्मा ही सम्पूर्ण प्रकृति को सजीव बनाये हुए है, केवल एक ही जीवन पत्थरों, वनस्पतियों, जन्तुओं और स्वयं मनुष्य में भी व्याप्त है।' हम्बोल्ट प्रकृति को एक जैव इकाई (Biological unit) मानते थे जिसकी उत्पत्ति किसी विशेष क्षेत्र में जैव (चेतन) और अजैव (अचेतन) वस्तुओं के सुव्यवस्थित अंतर्सम्बंधों से होती है। इसीलिए वे एकीकृत विज्ञान में विश्वास रखते थे जिसमें समस्त भौतिक, जैविक और सामाजिक विज्ञान सम्मिलित रहते हैं।

निष्कर्ष- भौगोलिक चिन्तन के इतिहासकार एकमत से हम्बोल्ट को आधुनिक भूगोल का संस्थापक मानते हैं। डिकिन्सन (1969) के अनुसार वे आधुनिक भौगोलिक चिन्तन के मार्गदर्शक के साथ ही भविष्यद्रष्टा भी थे। डि मार्तोन (1948) के अनुसार हम्बोल्ट ने भूगोल की दो मौलिक विशेषताओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया था- **(1) कार्य-कारण का सिद्धान्त, और (2) सामान्य भूगोल का सिद्धान्त।** हम्बोल्ट ने आनुभविक और आगमनात्मक अध्ययन

पद्धति को अपनाया था और वे प्रेक्षण की सूक्ष्मता तथा परिशुद्धता पर विशेष बल देते थे। हम्बोल्ट भूगोल में क्रमबद्ध और प्रादेशिक अध्ययन को एक-दूसरे का विरोधी नहीं बल्कि पूरक मानते थे । हार्टशोर्न के अनुसार तुलनात्मक प्रादेशिक भूगोल के वास्तविक मार्गद्रष्टा हम्बोल्ट थे न कि कार्ल रिटर।